IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 8, June 2025
Impact Factor: 7.67

उच्च शिक्षा में उपनिषदीय शिक्षा दर्शन ''धर्ममचर'' अर्थात् धर्म का आचरण करो।

डॉ. ज्योति जोशी
एसिस्टेन्ट प्रोफेसर
संस्कृत विभागाध्यक्ष
एस.एस. जैन सुबोध गर्ल्स पी.जी. कॉलेज सांगानेर

सार– हमारे देश की शिक्षा का इतिहास ऋग्वेद काल से माना जाता हैं क्योंकि मंत्र हमारे तात्कालिक शिक्षा व्यवस्था को स्पष्ट करते हैं वैदिक काल से हमारी शिक्षा प्रकृति के माननीय रूप, प्रकृति की उपासना आदि सभी से भरी हुई हैं उस समय आत्मज्ञान पर बहुत बल दिया गया था। वैदिक साहित्य का एक बहुत बड़ा भाग उपनिषद् ही हैं हमारी वैदिक कालीन संस्कृति का समृद्ध रूप उपनिषद् में ही देखने को मिलता है। उपनिषद् कालीन साहित्य में वैज्ञानिक, दार्शनिक, धार्मिक आदि सभी प्रकार के चिन्तन देखने को मिलते हैं।

वैदिक कालीन साहित्य में हमारे मनीषियों ने वृहद रूप से जो अनुभव प्राप्त किया जिसको व्यावहारिक रूप में लागू किया, वे सार रूप में दिये गये हैं। आज की तरह उस समय भी जीवन लक्ष्यों की प्राप्ति का एक बहुत बड़ा साधन शिक्षा को माना गया था। इसलिये ज्ञान राशि स्वरूप समस्त वेदों की सारभूत उपनिषद् संस्कृत वाङ्. मय की अनुपम धरोहर है।

शब्दकोष :– आत्मज्ञान, आध्यात्मिक, शिक्षावल्ली ज्ञान धारा, परमात्मा, उपनिषद्, एकाग्रता।

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in